



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 7

मार्च, 2025

मूल्य : ₹2.00



। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

कुलपति सन्देश

वन्यजीवों का संरक्षण प्रकृति के पारिस्थितिक संतुलन के लिए आवश्यक: कुलपति

आप सभी को विश्व वन्यजीव दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। वन्यजीव हमारी धरा पर एक अमूल्य धरोहर है। ये मानव जीवन के प्रमुख हम सफर है, भारत में वन्यजीवों के प्रबंधन का इतिहास पुराना है। वन्यजीवों का पर्यावरण को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। वन्यजीव प्रकृति की विभिन्न प्रक्रियाओं को स्थिरता प्रदान करते हैं, वन्यजीव और प्रकृति भावनात्मक और सामाजिक कारणों से मनुष्यों से काफी हद तक जुड़े हुए हैं। अनादिकाल से ही मनुष्यों का वन्यजीवों से सांस्कृतिक एवं धार्मिक लगाव रहा है। बाघ, गरुड़, चूहा, बैल इत्यादि पशुओं को दुर्गा, विष्णु, गणेश व शिव इत्यादि का वाहन माना जाता है। पौराणिक कथाएं और साहित्य वन्यजीवों के विवरण से भरे हुए हैं। प्रजातियों, आवासों और पारिस्थितिकी तंत्र के निरंतर नुकसान से पृथ्वी पर सभी तरह के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है तथा बहुत सी प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं। इन्टरनेशनल युनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर की रेड लिस्ट (खतरे वाली प्रजातियों) के आंकड़ों के अनुसार जंगली जीवों व वनस्पतियों की 8400 से अधिक प्रजातियां गंभीर रूप से संकट ग्रस्त हैं तथा 30,000 से अधिक प्रजातियां लुप्त प्रायः हैं। प्रजातियों के विलुप्त होने में मानव गतिविधियों के साथ-साथ शहरीकरण से निवास स्थान का नुकसान, अतिशोषण, प्रजातियों को अपने प्राकृतिक आवासों से स्थानान्तरित करना, वैश्विक प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन है। इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दुनिया भर में गंभीर रूप से लुप्त हो रहे वन्यजीवों व जंगली फल-फूलों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर रोक लगाने के लिए 3 मार्च, 1973 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किये थे तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2013 में अपने 68वें सत्र में 3 मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस मनाने की घोषणा की थी। 3 मार्च, 2014 को पहला विश्व वन्यजीव दिवस मनाया गया था तथा यह एक वैश्विक कार्यक्रम बन गया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रायः लुप्त होने वाली प्रजातियों की रक्षा के लिए जैव विविधता तथा संरक्षण प्रयासों पर जोर दिया जा रहा है। विश्व वन्यजीव-2025 का विषय "वन्यजीव संरक्षण वित्त : लोगों और ग्रह में निवेश" है। यह विषय वन्यजीव संरक्षण के प्रयासों का समर्थन करने के लिए स्थायी वित्तिय संसाधनों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है। चूंकि जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, आवास-विनाश और अवैध वन्यजीव व्यापार से खतरों का सामना कर रही है। इसलिए इनके संरक्षण के लिए अभिनव वित्तिय तंत्र की आवश्यकता है। सरकारी एवं कई गैर सरकारी संगठनों तथा व्यक्तियों को वन्यजीवों के संरक्षण के लिए चर्चा कर संरक्षण के प्रयास करने चाहिए साथ ही हम सभी को मिलकर वन्यजीवों के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करने चाहिए तथा विभिन्न कार्यक्रमों जैसे चर्चाएं, वेबीनार व प्रदर्शनियों के माध्यम से वन्यजीवों के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए। विश्वविद्यालय को भी अपने विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित कर वन्यजीवों के संरक्षण में योगदान देना चाहिए।

आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी





मानव उपभोग हेतु पशु उत्पादों में खाद्य संरक्षा पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में देश भर के प्रसार शिक्षा में उच्च अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु पांच दिवसीय "प्रसार शिक्षा में नई दक्षता, कैरियर के अवसर और अनुसंधान प्राथमिकताएं" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 10-14 फरवरी तक आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि आचार्य मनोज दीक्षित, कुलपति राजुवास ने ऑनलाइन इन्टरैक्ट किया एवं सभी को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी के बाद पहली चुनौती देश के कृषि एवं पशुधन उत्पादन की थी जो कि विभिन्न योजनाओं एवं तकनीकी माध्यम से काफी हद तक पूरी की गई। आज देश के सामने बड़ी चुनौती गुणवत्ता निर्धारण की है। देश में खनिज लवणों, मेडिकल जड़ी बूटियों, वनस्पति सम्पदा, पशु सम्पदा, खाद्य संसाधनों का पूर्ण भण्डार है। हमें उचित तरीके से नीति निर्धारण करके इनका समुचित उपयोग भी करना है और इन्हें सुरक्षित भी करना है। कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि डॉ. सरवन राज, निदेशक (कृषि प्रसार) मैनेज हैदराबाद (तेलंगाना) ने कहा कि मैनेज हैदराबाद, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन एक शीर्ष संस्था है जो कि देश में प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में जुड़े वैज्ञानिकों, प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि महेश चन्द्रा, प्रधान वैज्ञानिक, आई.वी.आर.आई., बरेली ने कहा कि यह प्रसार शिक्षा क्षेत्र के विद्यार्थियों हेतु राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो कि विद्यार्थियों में विभिन्न अनुसंधान एवं प्रसार कौशल विकास करने हेतु आयोजित किया गया है। निदेशक मैनेज डॉ. सरवन राज ने कहा कि देश भर में 7 प्रशिक्षणों के माध्यम से 373 प्रसार शिक्षा अध्ययनरत विद्यार्थियों को यह प्रशिक्षण दिया गया है। जिसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय के 80 प्रशिक्षार्थी शामिल है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. हेमंत दाधीच ने कहा कि विश्व में कृषि एवं पशुपालन से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में 60 प्रतिशत रोजगार के अवसर प्रसार कौशल से संबंधित है। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. देवी सिंह ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजस्थान, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र सहित 7 विश्वविद्यालयों के कुल 80 विद्यार्थी प्रतिभागी है जिनमें 36 छात्राएं एवं 44 छात्र प्रतिभागी है। जिनको देश के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक द्वारा प्रसार शिक्षा में विभिन्न आयामों पर अनुसंधान विश्लेषण, शोध विधियां, उद्यमिता विकास, ऑर्गेनिक खेती, जेडर समानता, नीति निर्धारण, योजना निर्धारण, व्यक्तित्व विकास आदि विषयों को व्याख्यानों के साथ साथ प्रायोगिक, प्रदर्शन, समूह चर्चा आदि विधियों से समझाया जायेगा।



वेटरनरी विश्वविद्यालय (जोबनेर) के नव नियुक्त कुलपति ने की वेटरनरी विश्वविद्यालय (बीकानेर) के कुलपति से शिखर वार्ता

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (जोबनेर), जयपुर के नव नियुक्त कुलपति प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने 13 फरवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित से समन्वय बैठक एवं शिखर वार्ता की। आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि बैठक में दोनों विश्वविद्यालयों के परस्पर सामंजस्य, शैक्षणिक, शोध, प्रसार, संसाधन आदि का उपयोग परस्पर समन्वय के साथ पशुपालकों के हितार्थ एवं राज्य में पशुधन सम्पदा के संरक्षण एवं उत्पादन स्तर को बढ़ाने हेतु करने पर चर्चा की। बैठक के दौरान (जोबनेर) के वित्त नियंत्रक प्रो. धर्म सिंह मीना, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. हेमंत दाधीच, एवं राजुवास के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 20-22 फरवरी को आयोजित हुआ। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कार्यकारी निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. उर्मिला पानू ने कहा कि गौशालाएं राज्य में गायों के संरक्षण का कार्य कर रही है। गौशालाओं में गायों के स्वास्थ्य एवं उत्पादन भी बहुत बड़ी समस्या है। गौपालकों एवं गौशाला संचालकों को गोपालन हेतु वैज्ञानिक प्रशिक्षणों से हम कई समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं एवं गौशालाओं को स्वावलम्बी बना सकते हैं। गौशालाओं को उन्नत वैज्ञानिक प्रबंधन से गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाया जा सकता है। प्रशिक्षणार्थी वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली जानकारी एवं उन्नत प्रबंधन कौशल को अपनाकर गौशालाओं से लाभार्थी बन सकते हैं। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सूरजमल जी निमराना, प्रदेशाध्यक्ष गौ ग्राम सेवा संघ, बीकानेर ने कहा कि गौशालाओं को संरक्षण एवं स्वावलम्बी बनाने हेतु राज्य सरकार ने गोपालन विभाग, राजस्थान सरकार गोपालकों एवं गौशाला प्रबंधकों को उन्नत गोपालन के लिए ज्ञान एवं कौशल विकास हेतु विश्वविद्यालयों एवं अन्य संस्थानों के परस्पर सहयोग से निरन्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवा रहा है जो कि गोपालकों हेतु जरूरी भी है। आमजन को भी गौसंरक्षण हेतु जागरूक होना पड़ेगा ताकि निराश्रित गौवंश वाहनों की चपेट में ना आए। कार्यकारी निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. प्रवीण बिशनोई ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय में आधुनिक पशु चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध है जिसका गोपालक पशु ईलाज हेतु उपयोग कर सकते हैं। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. देवी सिंह राजपूत ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में बीकानेर संभाग के बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों के 35 गौशाला संचालकों एवं प्रबंधकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञों द्वारा उन्नत गौशाला प्रबंधन, देशी गोवंश संरक्षण, स्वच्छता एवं आवास प्रबंधन, संतुलित आहार, वर्षभर हराचारा, बर्मी कम्पोस्ट, गोबर का मूल्य संवर्धन राज्य सरकार की डेयरी फार्म योजनाएं, गौ नस्ल सुधार, पंचगव्य का महत्व आदि विषयों पर व्याख्यानों के साथ-साथ आदर्श गौशाला एवं डेयरी भ्रमण करवाया गया।





निदेशालयों के नये भवन का हुआ भूमि पूजन

राजरथान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 15 फरवरी को निदेशालयों के नये भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया। अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. हेमंत दाधीच ने बताया कि विश्वविद्यालय में प्रशासनिक कार्यों के सुचारु संचालन हेतु परिसर में विभिन्न निदेशालयों हेतु नये भवनों के निर्माण हेतु कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा विधिवत् भूमि पूजन किया गया। इन नये प्रशासनिक भवनों के बन जाने से सभी प्रशासनिक कार्य एक स्थान पर संपादित हो पायेंगे। भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान वित्त नियंत्रक बी.एल. सर्वा सहित विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर, शिक्षक एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी

गाँव बम्बलू में स्वच्छता अभियान का आयोजन

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गाँव बम्बलू में ग्राम पंचायत कार्यालय में 22 फरवरी को स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के एन.एस.एस. के विद्यार्थियों ने श्रमदान किया और विद्यार्थियों द्वारा ग्रामवासियों को स्वच्छता के महत्व को बता कर जागरूक किया। शिविर का प्रबंधन समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर की डॉ. मैना कुमारी ने किया। इस शिविर के आयोजन में डॉ. संदीप खरे, ग्राम विकास अधिकारी (बम्बलू) रामदेव मंडा एवं ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



गांव कतरियासर में स्वच्छता अभियान

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीछवाल बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव कतरियासर के प्राथमिक आरोग्य केन्द्र में 22 फरवरी को स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वच्छता कार्यक्रम का प्रबंधन डॉ. सुनील कुमार सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीछवाल, बीकानेर द्वारा किया गया। इस शिविर के आयोजन में ग्राम विकास अधिकारी (कतरियासर) मिलन कुमार यादव सहित ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



गांव जोरजी का खेड़ा (नवानियां) में स्वच्छता कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 27 फरवरी को स्वच्छता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रबंधन डॉ. टीकमचन्द गोयल, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां द्वारा किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना था। अस कार्यक्रम में ग्रामवासियों के साथ महाविद्यालय के डॉ. महेन्द्र मील, डॉ. दिनेश झाम्ब का सहयोग रहा।



खतेपुरा में स्वच्छता जागरूकता अभियान

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव खतेपुरा में दिनांक 28 फरवरी को स्वच्छता जागरूकता अभियान का आयोजन डॉ. संजय कुमार रेवानी, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा किया गया। गांव में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खतेपुरा के विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्वता से अवगत कराया गया।



रामपुरावास-दूधली में स्वच्छता अभियान

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी (जयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव रामपुरावास में दिनांक 25 फरवरी, 2025 को स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस स्वच्छता अभियान में डॉ. शफात अहमद खान, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, डॉ. नरेन्द्र कुमार एवं टीचिंग एसोसिएट डॉ. महेन्द्र कुमार एवं डॉ. कुशल, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी ने सक्रिय भागीदार रही।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 11, 12, 13, 15 एवं 17 फरवरी को गांव हींगोली, साबोरा, महाराबर, थैराबर एवं बरताई गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 24-25 एवं 27-28 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 50 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा दिनांक 10 एवं 17 फरवरी को गांव वेरापुरा एवं अणगौर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 38 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12 एवं 13 फरवरी को गांव सारी, सुल्ताना, मनोता, केहरपुरा, इस्लामपुर, नारी, झाझोता एवं खुडांत गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 144 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 19 एवं 20 फरवरी को गांव चांदसेन, चौसला, देसमा, देसमी, जयसिंहपुरा, धोली, खेड़ा, नागोर की ढाणी, खुरतल, भवानीपुरा, झुंगरीकलां एवं किरौ की ढाणी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 13, 18, 20, 22 एवं 25 फरवरी को गांव दौनारी, जपावली, नधैरा, नयापुरा, भागीरथपुरा एवं पुरैनी गांवों में

तथा दिनांक 28 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 188 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा दिनांक 3, 7, 10, 13, 15, 20, 22 एवं 25 फरवरी को गांव ढिंगारीया, हांसियावास, जूलियासर, गुडाबड़ी, रूपेली, पहाड़सर, चारवास एवं अच्छापुर गांवों में तथा दिनांक 19 एवं 27 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 258 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा दिनांक 11, 12, 13, 14, 18, 22, 24 एवं 25 फरवरी को गांव करणसर, कुड़ियो का बास, खिजुरिया, घाटोलाई, ढाणी बोरज, सामोता का बास, भोजपुरा एवं अगरपुरा गांवों में तथा दिनांक 6 एवं 20 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 5, 6, 13, 15, 20 एवं 25 फरवरी को गांव चैनपुरा, खेड़ा, रंगपुर, पारलिया, ताथेड़ एवं कैथोडी गांवों में तथा दिनांक 11 एवं 24 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 185 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6 एवं 13 फरवरी को गांव कर्मसाना एवं रामसरा गांवों में तथा दिनांक 7-13 एवं 21-27 फरवरी को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 98 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





पशुओं में संतुलित आहार का महत्व

संतुलित आहार: संतुलित आहार ऐसा आहार होता है, जो पशु को आवश्यक पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज, लवण व विटामीन उचित अनुपात व मात्रा में प्रदान करें जिससे पशु का स्वास्थ्य, विकास, दुग्ध उत्पादन एवं प्रबंधन आदि बेहतर होता है।

संतुलित आहार का महत्व:

- संतुलित आहार देने से पशु का स्वास्थ्य एवं विकास बेहतर होता है।
- पशुओं का उत्पादन बढ़ता है एवं उनकी उत्पादक क्षमता भी बढ़ती है, जिससे पशु अधिक समय तथा ज्यादा मात्रा में दुध देता है।
- संतुलित आहार से सभी पोषक तत्व मिलते हैं, जिससे उनकी प्रजनन क्षमता भी बेहतर होती है तथा पशुओं में बांझपन की समस्या कम होती है।
- संतुलित आहार खिलाने से पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे पशु जल्दी बीमार नहीं होता तथा दवा का खर्चा भी बचता है।
- पशुओं के उत्पादन से होने वाला आर्थिक लाभ भी बढ़ता है।
- पशुओं के संतुलित आहार में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण व विटामीन होना चाहिए।

संतुलित आहार में सुखा चारा, हरे चारे के साथ-साथ दाना मिश्रण भी देना चाहिए। दाना मिश्रण बनाने के लिए मुख्यतः खल, अनाज, अनाज के उत्पादों, खनिज विटामीन लवण का उपयोग करते हैं

खल : बिनोला, मूंगफली एवं सरसों का खल

अनाज : बाजरा, मक्का, ज्वार तथा जौ

अनाज उत्पादो : चना चुरी, किन्की, गेहूं का चोकर

संतुलित आहार का पशु के विकास व प्रजनन अवस्था प्राप्त करने में योगदान

- बछड़ों के बेहतर विकास के लिए संतुलित आहार देना चाहिए।
- पशुओं में प्रजनन अवस्था आयु के साथ-साथ वजन पर भी निर्भर करती है। संतुलित आहार देने से पशु का वजन भी बढ़ेगा और वह जल्दी प्रजनन को प्राप्त करेगा।
- पशुओं में आहार की मात्रा उनकी शारीरिक अवस्था व वजन पर निर्भर करती है।
- बछड़ों के संतुलित आहार में जन्म के आधे घण्टे के अन्दर कोलोस्ट्रम या खीस पिलाना चाहिए तथा दूसरे सप्ताह से अच्छे गुणवत्ता का दाना या घास देना चाहिए।
- छः माह तक बछड़े को 1-1.5 किग्रा दाने का मिश्रण तथा सुखा व हरा चारा भरपूर देना चाहिए।
- छः माह से ज्यादा आयु वाले या छः माह से प्रजनन की आयु तक 2 किग्रा मिश्रण देना चाहिए।

दुधारू पशुओं के लिए संतुलित आहार

- दुध देने वाले पशुओं को संतुलित आहार खिलाने से उनका दुध उत्पादन बढ़ता है और उनकी सेहत भी अच्छी बनी रहती है।
- दुध देने वाले पशुओं को सुखा चारा व हरा चारा भरपूर देना चाहिए।
- दुध देने वाले पशुओं में दाना मिश्रण की आवश्यकता को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक तो पशु के शरीर की देखभाल के लिए तथा दूसरा उसके दुध उत्पादन के आधार पर।
- गाय में प्रत्येक 2.5 लीटर दुध पर एक किलो दाना तथा भैंस व संकर गाय में प्रत्येक 2 लीटर दुध उत्पादन पर 1 किग्रा दाना देना चाहिए।

- पशुओं के कुल आहार का 50 प्रतिशत भुसा और हरा चारा तथा 50 प्रतिशत दाने का मिश्रण देना चाहिए।
- हरे चारे में दलहनी तथा गैर दलहनी चारे का मिश्रण देना चाहिए तथा दलहनी चारे की मात्रा बढ़ाने पर दाना मिश्रण की मात्रा कम की जा सकती है।

संतुलित आहार खिलाते समय ध्यान रखने योग्य बातें:

- आहार उचित रूप से संतुलित एवं स्वादिष्ट होना चाहिए।
- आहार में पर्याप्त मात्रा में हरा चारा तथा खनिज पदार्थ होना चाहिए।
- आहार में अचानक परिवर्तन से बचे एवं भोजन में नियमितता बनाये रखें।
- फीड का उचित रूप से तैयार किया जाना चाहिए जैसे कि कुछ अनाजों को पीस कर उपयोग करें जिससे वह सुपाच्य और स्वादिष्ट हो।

सारांश: पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए। पशु का खानपान उसकी शारीरिक अवस्था के अनुसार हो साथ ही पशु को सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में मिलें जिससे उसकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़े ताकि पशु स्वस्थ रहेगा तथा उत्पादन भी अच्छा होगा जिससे पशुपालकों को आर्थिक लाभ हो सके।

डॉ. नीलम कुमारी एवं डॉ. अमित चौधरी

पशुपालन नए आयाम फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

- | | |
|---|--|
| 1. प्रकाशन स्थान | : बीकानेर (राज.) |
| 2. प्रकाशन अवधि | : मासिक |
| 3. प्रकाशक का नाम | : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच |
| (क्या भारत का नागरिक है) | : हां |
| (क्या विदेशी है तो मूल देश) | : |
| पता | : निदेशक प्रसार शिक्षा,
बिजय भवन पैलेस,
राजुवास, बीकानेर |
| 4. मुद्रक का नाम | : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच |
| (क्या भारत का नागरिक है) | : हां |
| (क्या विदेशी है तो मूल देश) | : |
| पता | : निदेशक प्रसार शिक्षा,
बिजय भवन पैलेस,
राजुवास, बीकानेर |
| 5. संपादक का नाम | : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच |
| (क्या भारत का नागरिक है) | : हां |
| (क्या विदेशी है तो मूल देश) | : |
| पता | : निदेशक प्रसार शिक्षा,
बिजय भवन पैलेस,
राजुवास, बीकानेर |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों | : लागू नहीं |

मैं प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01-3-2025

(प्रो. {डॉ.} हेमन्त दाधीच)
प्रकाशक के हस्ताक्षर



पशुओं में आफरा रोग : कारण, बचाव एवं उपचार

गाय-भैंस तथा अन्य जुगाली करने वाले पशुओं में कभी-कभी आफरा होना पेट फूलने की एक सामान्य समस्या मानी जाती है। जिसमें पशु के पेट में अधिक मात्रा में गैस भर जाती है। बांयी तरफ का पेट फूल जाता है। सामान्य आफरे में पशुपालक अपने पशु को प्राथमिक उपचार दे सकते हैं लेकिन यदि आफरे की तीव्रता बहुत अधिक हो तो तुरन्त पशुचिकित्सक से उपचार करवाना अत्यंत आवश्यक है।

कारण :- आफरा अधिकांशतः अधिक मात्रा में हरा और रसीला चारा या दलहनी चारा, अधिक दाना, चारे में हुए अचानक परिवर्तन, दूषित आहार या किसी अन्य कारण से जैसे ग्रास नलिका में हुयी रुकावट, एक ही करवट से पशु का अधिक समय तक लेटे रहना, आंतों में रुकावट का होना आदि के कारण उत्पन्न होता है।

लक्षण :- आफरे के कारण पेट में अत्यधिक गैस भर जाने के कारण बांयी तरफ का पेट फूलता है और उसे थपथपाने पर ढोल जैसी आवाज आती है एवं आफरे की तीव्रता अधिक होने पर पशु को श्वास लेने में तथा हृदय के सामान्य संचालन में कठिनाई होती है। पशु बेचैन हो उठता है। चारा खाना व पानी पीना बन्द कर देता है। पशु बार-बार पेट की तरफ देखता है एवं उठता-बैठता है। बांयी ओर के पेट की तरफ पैर मारता है। धीरे-धीरे पशु का गोबर व पेशाब होना भी बन्द हो सकता है। यदि उपचार न किया जाये तो पशु लेटने को विवश हो जाता है और गहरी-गहरी सांसे लेता है। पशुपालक इन लक्षणों को देखकर आसानी से पशु में आफरे की पहचान कर सकते हैं।

उपचार :- रोग की पहचान होते ही रोग की तीव्रता के अनुसार पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए और पशुचिकित्सक के आने तक पशु के बांये पेट पर दबाव डालकर मालिश करनी चाहिए एवं प्राथमिक चिकित्सा के तौर पर व्यस्क गाय-भैंस को हींग 5 से 10 ग्राम, अजवाइन 50 ग्राम, काला नमक 100 ग्राम, तेल (अलसी, तिल या सरसों) 500 एम.एल. आदि घर पर ही उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही जितना हो सके पशु को चलाना-फिराना या दौड़ाना चाहिए। प्रायः उक्त घरेलू सामग्री के प्रथम प्रयोग से साधारण आफरा ठीक हो जाता है साथ ही जरूरत होने पर आवश्यकतानुसार इसका दुबारा प्रयोग भी कर सकते हैं। जब रोग अति तीव्र अवस्था में हो तो इस तरह की स्थिति में पशु की जान बचाना कुशल पशुचिकित्सक का मुख्य उद्देश्य हो जाता है एवं इस स्थिति में आवश्यकता पड़ने पर ट्रोकार और कैनूला का प्रयोग पेट के बांयी तरफ छिद्र बनाने और गैस निकालने के लिए करते हैं तथा गैस निकालने के उपरांत इसी के द्वारा सीधे पेट में औषधि भी डाल देते हैं।

पशुओं को आफरे की समस्या से बचाने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पशुओं द्वारा अनाज या आटे जैसे आहार खाने पर यदि आफरा आता है तो तुरन्त पशु को 50 से 100 ग्राम मीठा सोडा देना लाभकारी रहता है। आफरे से बचाव हेतु पशुओं को हरे चारे के साथ सुखा चारा मिलाकर खिलाना चाहिए। एकदम से चारे एवं दाने में बदलाव नहीं करना चाहिए। नियमित रूप से पशुओं को आहार में पाचक चूर्ण देने चाहिए। मुंह से कोई भी दवाई पिलाते समय कभी भी पशु की जीभ नहीं पकड़नी चाहिए अन्यथा दवाई फेंफड़ों में जा सकती है एवं पशु को निमानिया हो सकता है। उपरोक्त लिखित बातों को ध्यान में रखकर पशुपालक अपने पशुओं को आफरे से बचा सकते हैं।

डॉ. अतुलशंकर अरोड़ा
पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

बोटुलिज्म को जाने व समझें

बोटुलिज्म पशुओं में होने वाली एक खतरनाक और घातक न्यूरोलॉजिकल बीमारी है, जो क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिनम नामक बैक्टीरिया द्वारा उत्पादित जहरीले टॉक्सिन के कारण होती है। यह बीमारी पशुओं में आमतौर पर दूषित चारा, सड़ा हुआ भोजन, या गंदगी के संपर्क में आने से फैलती है। बोटुलिज्म मुख्य रूप से गाय, भैंस, बकरी और घोड़े जैसे पशुओं को प्रभावित करती है और यदि समय पर उपचार न किया जाए, तो यह जानलेवा साबित हो सकती है। यह बैक्टीरिया न्यूरोटॉक्सिन उत्पन्न करता है, जो तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है और पशुओं में मांसपेशियों की कमजोरी और पक्षाघात का कारण बनता है। बोटुलिज्म के सात प्रकार हैं, जो विष की प्रतिजन विशिष्टता द्वारा विभेदित हैं : ए, बी, सी 1, डी, ई, एफ और जी। प्रकार ए, बी और ई मनुष्यों में सबसे महत्वपूर्ण हैं, अधिकांश पशु प्रजातियों में सी 1, विशेष रूप से जंगली बत्ख, तीतर, मुर्गी, मिक, घोड़े और मवेशियों में डी।

प्रारंभिक लक्षण :

- ❖ मांसपेशियों में कमजोरी महसूस होना विशेषकर पैरों और गर्दन की।
- ❖ पशु का अचानक लंगड़ा-लूला हो जाना।
- ❖ सांस लेने में परेशानी हो सकती है, जो गंभीर मामलों में घातक हो सकती है।
- ❖ पशु का भोजन और पानी लेने में अरुचि तथा दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी।
- ❖ अंतिम चरण में पशु पूरी तरह से गतिहीन हो जाता है।
- ❖ सांस लेने की क्षमता पूरी तरह से खत्म हो जाती है, जिससे मृत्यु हो सकती है।

निदान :

- ❖ रक्त परीक्षण में बोटुलिज्म विषाक्तता की पुष्टि के लिए एंटीटॉक्सिन से पता लगाना।
- ❖ मल परीक्षण में क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिज्म जीवाणु की उपस्थिति की जांच करना।
- ❖ मृत पशु के शरीर का परीक्षण करके बोटुलिज्म विषाक्तता की पुष्टि करना।
- ❖ तंत्रिका तंत्र के प्रभावित होने के लक्षणों की जांच के द्वारा पता लगाना।

उपचार :

- ❖ बोटुलिज्म के विषाणु को निष्क्रिय करने के लिए एंटीटॉक्सिन का उपयोग किया जाता है। यह विषाणु को निष्क्रिय करता है और जितनी जल्दी दिया जाए उतना प्रभावी होता है।
- ❖ गंभीर मामलों में, पशुओं को श्वसन सहारा देना आवश्यक हो सकता है, जिसमें ऑक्सीजन थेरेपी या यांत्रिक वेंटिलेशन शामिल हो सकता है।
- ❖ यदि संक्रमण का जोखिम हो, तो एंटीबायोटिक्स का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन यह बोटुलिज्म के विषाणु को समाप्त नहीं करता है।
- ❖ पशुओं को संदिग्ध खाद्य पदार्थों से दूर रखना और उन्हें डिटॉक्सिफाई करने के लिए सक्रिय कोयला दिया जा सकता है।

टीकाकरण :

- ❖ टीकाकरण से पशुओं में बोटुलिज्म के विषाणु के खिलाफ प्रतिरक्षा विकसित होती है, जो उन्हें इस रोग से बचाने में मदद करती है।
- ❖ पहली खुराकरू नवजात पशुओं को 3-4 महीने की उम्र में बोटुलिज्म का पहला टीका दिया जाना चाहिए।
- ❖ बूस्टर खुराकरू पहली खुराक के 4-6 सप्ताह बाद बूस्टर खुराक दी जानी चाहिए।
- ❖ वार्षिक टीकाकरणरू उसके बाद हर साल नियमित रूप से बोटुलिज्म का टीका दिया जाना चाहिए।

रोकथाम :

- ❖ मृत जानवरों का सही तरीके से निपटान करें ताकि विषाणु न फैले।
- ❖ पशुओं को बोटुलिज्म के खिलाफ समय पर टीकाकरण कराएं।
- ❖ पशुओं को सड़ा-गला खाना और खराब चारा न दें।
- ❖ पशुओं के आवास और चारे की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ कुछ क्षेत्रों में बोटुलिज्म एंटी-टॉक्सिन का उपयोग किया जा सकता है। हालांकि यह सभी जगह उपलब्ध नहीं होता, लेकिन यह बोटुलिज्म के गंभीर मामलों को रोकने में सहायक हो सकता है।

डॉ. सौरभ शर्मा एवं डॉ. सुनील राजोरिया
पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक



साल्मोनेलोसिस: एक जानलेवा संक्रमण

साल्मोनेलोसिस एक गंभीर बैक्टीरियल संक्रमण है जो पशुओं को प्रभावित करता है और इसके परिणामस्वरूप कई स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। साल्मोनेला एक प्रमुख खाद्य जनित रोगाणु है और मनुष्यों और पशुओं में गैस्ट्रोएंटेराइटिस (आंतों की सूजन) का प्रमुख कारण है। यह अक्सर एक अवसरवादी बैक्टीरिया होता है, जिसका मतलब है कि यह पशु को तब संक्रमित करता है जब उसका इम्यून सिस्टम कमजोर हो।

साल्मोनेलोसिस रोग कैसे फैलता है!

साल्मोनेलोसिस का प्रसार विभिन्न तरीकों से होता है।

- दूषित आहार और पानी:** साल्मोनेलोसिस का मुख्य स्रोत दूषित आहार और पानी है, जब पशु संक्रमित आहार जैसे कच्चा मांस, अण्डे, या दूषित पानी का सेवन करते हैं तो वे इस बैक्टीरिया से संक्रमित हो सकते हैं।
- प्रत्यक्ष सम्पर्क— संक्रमित पशुओं से सम्पर्क:** संक्रमित पशुओं के सम्पर्क में आने से यह बैक्टीरिया फैल सकता है।
- संक्रमित मल और गंदगी:** संक्रमित पशु के मल के सम्पर्क में आने से यह बैक्टीरिया फैल सकता है। अस्वच्छ वातावरण में मलमूत्र को ठीक से निपटाने से संक्रमण फैल सकता है।
- मनुष्यों से सम्पर्क:** पशुपालकों या कर्मचारियों के हाथों में बैक्टीरिया का संक्रमण होने से यह पशुओं में फैल सकता है, यदि वे स्वच्छता का पालन नहीं करते।

साल्मोनेलोसिस के लक्षण:

बुखार: (104°-106° F): पहले बुखार होता है इसके बाद आहार से अरुचि, अवसाद और गंधयुक्त दस्त होते हैं जिसमें खून, श्लेष्मा और आंतों की परत के टुकड़े भी शामिल हैं।

दूध उत्पादन में कमी: दूध देने वाले पशुओं में दूध उत्पादन में गंभीर कमी हो सकती है।

गर्भपात: संक्रमित पशुओं में गर्भपात हो सकता है।

निर्जलीकरण: निर्जलीकरण की स्थिति बीमारी की गंभीरता के अनुसार भिन्न हो सकती है, अधिक निर्जल होने पर मृत्यु तक हो सकती है।

तापमान में वृद्धि: बुखार आमतौर पर 12 से 24 घण्टे पहले बढ़ता है और दस्त के शुरू होने पर तापमान फिर से घट सकता है।

निदान: साल्मोनेलोसिस का निदान बैक्टीरिया की उपस्थिति की पहचान के आधार पर किया जाता है।

मल परीक्षण: साल्मोनेलोसिस का निदान आमतौर पर मल परीक्षण से किया जाता है। इस परीक्षण में साल्मोनेला बैक्टीरिया की उपस्थिति की जांच की जाती है। यह सबसे सामान्य और प्रभावी तरीका है।

रक्त परीक्षण: जब संक्रमण गंभीर हो और बैक्टीरिया रक्त में प्रवेश कर चुका हो तो रक्त परीक्षण के माध्यम से यह पुष्टि की जा सकती है।

पीसीआर परीक्षण: यह एक अत्याधुनिक परीक्षण है जो बैक्टीरिया के डीएनए को पहचानता है। यह परीक्षण विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब बैक्टीरिया की संख्या कम हो।

सीरोलॉजिकल परीक्षण: रक्त या दूध में एंटीबॉडी की पहचान करने के लिए यह परीक्षण किया जाता है। यह परीक्षण संक्रमण के बाद की स्थिति को समझने में सहायक होता है।

उपचार:

साल्मोनेलोसिस के उपचार में मुख्य रूप से लक्षणों को नियंत्रित करने और बैक्टीरिया को नष्ट करने पर ध्यान दिया जाता है।

- ❖ गंभीर संक्रमणों के लिए डाक्टर एंटीबायोटिक्स का उपयोग कर सकते हैं। यह बैक्टीरिया को नष्ट करता है लेकिन हल्के मामलों में इनकी आवश्यकता नहीं होती।
- ❖ साल्मोनेलोसिस प्रभावित पशुओं में दस्त और उल्टी के कारण पानी की कमी हो सकती है। ऐसे में तरल पदार्थों का सेवन और इलेक्ट्रोलाइट (ओ.आर.एस.) का उपयोग आवश्यक हो सकता है।
- ❖ बुखार और दर्द को कम करने के लिए सहायक दवाइयां दी जा सकती हैं। यह पशु को आराम देने और उनकी सेहत को बेहतर बनाने में मदद करता है। पशुचिकित्सक की सलाह पर तुरंत उपचार लेना चाहिए।

साल्मोनेलोसिस के प्रसार को रोकने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं:

- ❖ पशुओं के रहने की जगह को स्वच्छ रखना बेहद महत्वपूर्ण है। उनका मल-मूत्र उचित तरीके से निपटाना चाहिए और संक्रमण से बचाव के लिए स्वच्छता का पालन आवश्यक है।
- ❖ पशुओं को साफ और स्वस्थ आहार एवं शुद्ध पानी देना चाहिए। कच्चे मांस, अण्डे और दूध आदि जो साल्मोनेला बैक्टीरिया से संक्रमित हो सकते हैं, उनको पूरी तरह से पक्का कर ही देना चाहिए।
- ❖ संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए ताकि संक्रमण फैलने से बच सके।
- ❖ कुछ मामलों में साल्मोनेलोसिस से बचाव के लिए टीका फायदेमंद हो सकता है। यह सभी प्रकार के साल्मोनेला बैक्टीरिया से बचाव नहीं करता है, परन्तु कुछ विशेष प्रकारों से रक्षा कर सकता है।

साल्मोनेला का आर्थिक प्रभाव: दूध उत्पादन में कमी, पशु मृत्यु दर, गर्भपात, उपचार लागत, एंटीबायोटिक से दूषित दूध से होने वाले नुकसान, बीमारा पशुओं के प्रबंधन के लिए बढ़ा हुआ श्रम, आहार दक्षता में कमी आदि

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

खेतपाल ने डेयरी व्यवसाय को बनाया आय का साधन

गांव 1 के.एस.आर. तहसील सूरतगढ़ जिला श्रीगंगानगर के प्रगतिशील पशुपालक श्री खेतपाल पुत्र रामकुमार के पास स्वयं की जमीन या अन्य कोई पैतृक संपत्ति न होने के कारण डेयरी व्यवसाय को अपनी आजीविका का साधन बनाया। सबसे पहले खेतपाल ने 2 गाय से पशुपालन की शुरुआत की परन्तु इससे जीविका चलाना कठिन था। इसलिए वह पशुपालन व्यवसाय को आगे बढ़ाना चाहते थे, परन्तु पशुपालन की जानकारी के अभाव में आगे बढ़ने से डर रहे थे। पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा इनके गांव में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने के बाद में वह पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आये इसी दौरान केन्द्र के द्वारा दी गई विभिन्न जानकारीयों को अपनाते हुये उन्नत नस्ल के पशुओं को अपनी डेयरी में शामिल करने की योजना बनाई और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया और आज इनके पास कुल 18 पशु हैं जिनसे वह प्रतिदिन 50 लीटर दुध का उत्पादन कर रहे हैं। इनका गांव शहर के समीप होने के कारण दुध की खपत भी आसानी से हो जाती है। इन्होंने पशुओं के लिए पक्का शैड भी बनवा रखा है यह अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान को अधिक महत्व देते हैं तथा प्राथमिक उपचार पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सलाह लेकर स्वयं कर लेते हैं तथा आवश्यकता होने पर पशुचिकित्सक की सेवायें भी लेते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा इन्हें समय-समय पर पुरा सहयोग दिया जाता है, जिसमें कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि आदि की जानकारीयां समय-समय पर इन्हें दी जाती है। इनके इस व्यवसाय को देखकर इनके परिवार के साथ-साथ गांव के अन्य लोग भी इनसे प्रेरित होकर इस व्यवसाय को अपनाने लगे हैं। खेतपाल ने एक सफल डेयरी व्यवसाय के रूप में अपने क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली है। इनके गांव के आस-पास के लोग भी इनसे पशुपालन से संबंधित जानकारी व सलाह के लिए सम्पर्क करते हैं। खेतपाल अपने इस व्यवसाय से सालाना लगभग 7.00 लाख रुपये तक की आय प्राप्त कर लेते हैं यह अपने इस डेयरी व्यवसाय से बहुत खुश हैं। यह अपने इस सफल व्यवसाय का श्रेय अपने परिवार के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को भी देते हैं।



सम्पर्क- खेतपाल, 1 के.एस.आर. तहसील-सूरतगढ़, जिला- श्रीगंगानगर (मो.9610809974)



पशुओं के लिए पोषण का उत्कृष्ट स्रोत है साइलेज

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है तथा देश के किसानों की समृद्धि में पशुपालन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान में भारत 230 मै. टन वार्षिक दूध उत्पादन के साथ विश्व में द्वितीय स्थान पर है तथा कुल दूध उत्पादन का 23 प्रतिशत दूध उत्पादन भारत में किया जाता है। भारत में प्रति पशु दूध उत्पादकता निरंतर कम होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण पशुओं में पोषण की कमी को माना जा रहा है। दूध उत्पादन के



लिए डेयरी पशुओं को संतुलित आहार का प्रबन्धन करना सबसे महत्वपूर्ण है किसी भी डेयरी फार्म में कुल लागत का 65-70 प्रतिशत आहार पर व्यय होता है। पशुओं में संतुलित आहार को सुनिश्चित करने के लिए हरा चारा पोषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है, परन्तु अधिक समय अकाल पड़ने तथा प्राकृतिक आपदाओं के कारण पशुओं को वर्षभर हरा चारा नहीं मिल पाता है। वर्ष में तीन से चार महिने यानि सर्दियों तथा गर्मियों की शुरुआत में पर्याप्त मात्रा में हरा चारा नहीं मिल पाता है। हरा चारा नहीं मिलने के कारण पशु की दूध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। इस कारण वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हरे चारे का संरक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है। हरे चारे का संरक्षण मुख्य रूप से 'हे' व 'साइलेज' बनाकर किया जाता है। साइलेज जिसे 'हरे चारे का आचार' बनाना भी कहते हैं। यह एक किण्वित चारा होता है, जिसमें 30-35 प्रतिशत शुल्क पदार्थ होता है। एनसाइसिंग प्रक्रिया में घुलनशील कार्बोहाइड्रेड लैक्टिक अम्ल में परिवर्तित हो जाता है। यह पोषक तत्वों को अपघटन से रोककर हरे चारे के भंडारण को बढ़ाता है। साइलेज को तैयार होने में 45 से 50 दिन का समय लगता है, तथा उचित अवस्था में इसे 2 वर्ष तक भंडारित किया जा सकता है। साइलेज बनाने के लिए मोटे तने वाली कार्बोहाइड्रेड युक्त चारा फसले जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, जई, संकर नेपियर घास आदि उपयुक्त है। अच्छी तरह से तैयार किये गये साइलेज हरे पीले या सुनहरे भूरे रंग का होता है, तथा इसमें सिरका जैसी गंध आती है। गाय व भैंसों को प्रतिदिन आहार में धीरे-धीरे उनके वजन का 5 प्रतिशत मिलाकर खिलाना चाहिए। साइलेज एक स्वादिष्ट और थोड़ा पोषक चारा होता है, जिसकी वजह से पशु इसे चाव से खाते हैं, इस प्रकार पशुपालक भाई भी साइलेज बनाकर पशुओं को वर्षभर संरक्षित हरा चारा खिलाकर दूध उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं तथा आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

“ धीणे री बातयां ”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच
संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

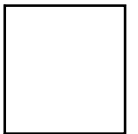
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच